SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
Vol. 3, Issue 10, April 2026
Available Online : http://shodhprakashan.in/

विकसित भारत @2047: भागलपुर आम उद्योग के लिए चुनौतियाँ और अवसर

डॉ. मनीष भारती

स्नातकोत्तर अर्थशास्त्र विभाग, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

सारांश

भागलपुर (बिहार) का जर्दालु आम खास लोकप्रियता और रसीले स्वाद के लिए विख्यात है। इसे 2018 में जीआई टैग प्राप्त है, जिससे इसकी ब्रांडिंग एवं निर्यात क्षमता बढ़ी है। बिहार में आम की खेती लगभग 1.60-1.65 लाख हेक्टेयर में फैली है, जो 15.4-15.5 लाख टन उत्पादन देती है। भागलपुर जिले में ही लगभग 7.68 हजार हेक्टेयर में आम की खेती होती है और वहाँ 2015-16 में 71.21 हजार टन उत्पादन हुआ। भारत 2023-24 में 223.98 लाख टन आम उत्पादन के साथ विश्व का सबसे बड़ा उत्पादक रहा। विकसित भारत-2047 के दृष्टिकोण से भागलपुर आम उद्योग में सम्भावनाएं बहुत हैं।

स्थानीय अर्थव्यवस्था, ग्राम रोजगार, और कृषि-आधारित उद्यमों को बढ़ावा मिलता है। जीआई टैग, अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों में निर्यात, विविधता वाले प्रसंस्करण (जूस, अचार, जैम), तथा उद्यान पर्यटन जैसे अवसर हैं। इसके विपरीत चुनौतियों में मौसमी अति-बारिश से पैदावार प्रभावित होना, कूड़ा-खराबी (प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार 25-30%), पुरानी बागवानी तकनीक, अपर्याप्त भंडारण एवं प्रसंस्करण सुविधाएं, तथा विकेन्द्रीकृत विपणन चैनल शामिल हैं।

यह रिपोर्ट भागलपुर के आम उद्योग पर उपलब्ध सरकारी एवं शोध डेटा का विश्लेषण करती है, साहित्य समीक्षा प्रस्तुत करती है, महत्वपूर्ण अनुसंधान अंतर की पहचान करती है, और नीतिगत-व्यावसायिक रोडमैप प्रदान करती है। तालिकाओं और चार्टों के माध्यम से उत्पादन आँकड़े, चुनौतियों व अवसरों की तुलना, तथा नीतिगत विकल्पों के लागत-लाभ-प्रभाव प्रस्तुत हैं।

बीजशब्द:- आम उत्पाद, जर्दालु आम, जीआई टैग, बागवानी, आम निर्यात, नीति रोडमैप।

परिचय

भारत स्वतंत्रता के 100वें वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का संकल्प लेकर चल रहा है। इस संदर्भ में कृषि और बागवानी में उत्पादकता व मूल्य संवर्धन की भूमिका निर्णायक है।

SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
Vol. 3, Issue 10, April 2026
Available Online : http://shodhprakashan.in/

आम, जिसे 'फल राजा' कहा जाता है, भारत में एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक फसल है। बिहार आम उत्पादन में देश में शीर्ष तीन राज्यों में शामिल है। भागलपुर जिला, बिहार में जर्दालु नामक एक विशेष आम की किस्म पाई जाती है, जो अपने अनूठे सुगंधित स्वाद और पतले छिलके के लिए प्रसिद्ध है। यह मसालेदार मिट्टी एवं गंगा की तराई के उपजाऊ मैदानों का फल है।

परंपरागत रूप से जेएप (मध्य-मई) में पकने वाली जर्दालु आम की खेती से हजारों किसान जुड़े हैं। जीआई टैग और सरकार के प्रयासों से जर्दालु की पहचान बढ़ी है। फिर भी, क्षेत्रीय खेती की कुछ सीमित (जैसे बागों की पुरानी अवस्थिति, अपर्याप्त निवेश) की वजह से उत्पादन अपेक्षाकृत कम होता रहा है। इस अध्ययन का उद्देश्य है भागलपुर के आम उद्योग के वर्तमान परिदृश्य, प्रमुख समस्याएं और विकास के रास्तों की पहचान करते हुए विकसित भारत @ 2047 के लक्ष्य के अनुरूप एक रोडमैप तैयार करना। इसमें कृषि विभागों, अनुसंधान संस्थानों, उद्योग और किसान संगठनों के सुझाए उपायों का समावेश है।

साहित्य समीक्षा

अध्ययन साहित्य से ज्ञात हुआ कि भारत दुनिया में कुल आम उत्पादन में 50% से अधिक हिस्सेदारी रखता है। बिहार आम उत्पादन में तीसरे स्थान पर है (लगभग 11% राष्ट्रीय उत्पादन)। आम की खेती पर शोध-लेख बताते हैं कि छोटे-छोटे किसान बड़े बाजारों तक नहीं पहुंच पाते और मध्यस्थ पर निर्भर रहते हैं। इकोनॉमिक एनालिसिस से पता चला है कि लम्बे मार्केट चैनलों में किसानों को कम मूल्य मिलता है, जबकि सीधे विक्रय से लाभ बढ़ता है।

नवीनतम रिपोर्टों में कृषि विभाग व APED की पहलें (जैसे बिहार में आमोत्सव, अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव) उल्लेखनीय हैं। जर्दालु आम पर जागृत शोध पाते हैं कि इसकी पैदावार 2015-16 में 7.68 हजार हेक्टेयर पर 71.21 हजार टन थी, जो आज भी बागों में उच्च औसत उपज दिखाती है। परंतु फलों में कटौती(Post-harvest loss) करीब 25-30% तक हो रही है। अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि खराब कटाई तकनीक, परिवहन में नर्सरी बक्से की कमी, तथा कोल्ड चेन में निवेश अभाव कटौती के प्रमुख कारण हैं।

नीति सम्बन्धी साहित्य में फल बागवानी योजनाएँ (MIDH, PMKSY, सॉफ्टवेयर) के तहत सब्सिडी दी जाती हैं, पर इनके क्रियान्वयन में चुनौतियां हैं। बाजार पहुंच के लिए अनुशंसित उपायों में किसान उत्पादक संगठन (FPO) बनाना, पैक हाउस तथा कोल्ड स्टोरेज इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास बताया गया है। निर्यात समर्थित प्राथमिक स्रोतों के अनुसार, भागलपुर की जर्दालु आम को पहले ही अँग्रेज़ भेजा जा चुका है, जिससे यह क्षेत्रीय गुणों को वैश्विक मान्यता मिल रही है। हालांकि, अभी अधिकांश किसानों के पास डिजिटल विपणन चैनल नहीं हैं।

SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
Vol. 3, Issue 10, April 2026
Available Online : http://shodhprakashan.in/

तालिका 1 में भागलपुर व बिहार की आम की क्षेत्र-उत्पादन आँकड़े दिए गए हैं, जो यह दर्शाते हैं कि बिहार की कुल पैदावार में भागलपुर का हिस्सा महत्वपूर्ण है (लगभग 4.6%)।

(Suggested Visual: एक ग्राफ में बिहार व भारत में आम उत्पादन व उत्पादकता की तुलना दिखाएं।)

क्षेत्र	क्षेत्रफल (हेक्टेयर).	उत्पादन (टन)	उत्पादकता (टन/हे.)	वर्ष (स्रोत)
भागलपुर (जिला)	7,680 (हजार)	71,210 (हजार)	B9.27	2015-16
बिहार (राज्य)	160,240 (हजार)	1,549,970(हजार)	9.67	2022-23
भारत (देश)	-	2,239,800(हजार).	-9.3	2023-24

तालिका 1: भागलपुर, बिहार और भारत में आम क्षेत्रफल तथा उत्पादन (स्रोत: कृषि विभाग आँकड़े, MoA रिपोर्ट)।

शोध अंतर (Research Gap)

भागलपुर के आम उद्योग पर व्यापक अध्ययन की कमी है जो स्थानीय समस्याओं को "विकसित भारत-2047" के परिप्रेक्ष्य में जोड़े। अधिकतर शोध राष्ट्रीय स्तर पर बागवानी पर केंद्रित रहे हैं, जबकि भागलपुर का विशेष यांत्रिक, आर्थिक और सामाजिक विश्लेषण अनुपस्थित है। GI टेग के बाद निर्यात संभावनाओं, मूल्य श्रृंखला में किसान हिस्सेदारी वृद्धि, तथा डिजिटल मार्केटिंग के क्षेत्र में स्थानीय स्तर पर और नीतिगत मार्गदर्शक चर्चाएँ अपेक्षित हैं। इसी तरह, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों और परंपरागत सिंचाई-तकनीकों के उन्नयन पर भागलपुर के संदर्भ में पर्याप्त डेटा उपलब्ध नहीं है। इस अध्ययन से यह अंतर स्पष्ट होगा कि कौन से क्षेत्रीय मुद्दे (जैसे बूंद सिंचाई, जैविक कीट नियंत्रण, बाग पुनरुत्थान) पर अधिक अनुसंधान की आवश्यकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

A. भागलपुर के आम उद्योग के वर्तमान ढांचे (उत्पादन, आपूर्ति श्रृंखला, विपणन संरचना) का विश्लेषण करना।

B. क्षेत्र की प्रमुख चुनौतियों (जैविक, पर्यावरणीय, आर्थिक, बुनियादी ढांचे संबंधित) और अवसरों (जैसे जीआई टैग, निर्यात, प्रसंस्करण) की पहचान करना।

C. उपलब्ध सरकारी नीतियों एवं योजनाओं (जैसे MIDH कृषक योजना) के प्रभाव एवं अनुपालन की समीक्षा करना।

SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
Vol. 3, Issue 10, April 2026
Available Online : http://shodhprakashan.in/

D. विकसित भारत-2047 के दृष्टिकोण से भागलपुर आम उद्योग के लिए चरणबद्ध रोडमैप तैयार करना, जिसमें कृषि-नीतिगत तथा व्यावसायिक कदम शामिल हों।

E. अध्ययन में अंतर्निहित शोध अंतर को चिन्हित करते हुए भविष्य के अनुसंधान के दिशा-निर्देश निर्धारित करना।

अध्ययन की सीमाएँ

इस अध्ययन में प्राथमिक सर्वेक्षण नहीं किया गया; ज्यादातर सूचनाएँ द्वितीयक स्रोतों (सरकारी रिपोर्ट, शोध पत्र, समाचार) पर आधारित हैं।

1. उपलब्ध आँकड़े अक्सर राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर के हैं; ग्रामीण-तहसील स्तर का सटीक डेटा सीमित है।
2. मौसम एवं आर्थिक परिस्थितियों में परिवर्तनशीलता अध्ययन को प्रभावित कर सकती है (जैसे वर्षा चरम के प्रभाव, वैश्विक बाजार गतिशीलता)।
3. नीतिगत आंकलन में समय अंतराल है; 2023 से पहले के वर्षों का डेटा प्रचलित है।
4. भाषा एवं संसाधनों की सीमाओं के चलते सभी क्षेत्रीय-भाषाई सूचनाएं शामिल करना संभव नहीं हो सका।

अध्ययन का महत्व

भागलपुर आम उद्योग पर यह गहन अध्ययन नीति-निर्माताओं, अनुसंधानकर्ताओं और उद्योगपतियों को अवगत कराएगा कि कैसे स्थानीय विशेषताओं का लाभ उठाकर आर्थिक विकास किया जा सकता है। विशेषकर जीआई टेग प्राप्त जर्दालु आम की उपलब्धि का विस्तार से अध्ययन कर वैश्विक पहचान को और मजबूत किया जा सकता है। यह रिपोर्ट बिहार एवं केंद्र सरकार को नीतिगत परिवर्तन में मार्गदर्शन देगी, जैसे कोल्ड स्टोरेज और प्रसंस्करण इकाइयों के निवेश, किसान संगठनों का सशक्तीकरण, और निर्यात-उन्मुख पहलें। साथ ही, यह किसानों व उद्यमियों को आधुनिक बागवानी तकनीक, मूल्य संवर्धन, और बाज़ार संबंधी अवसरों की जानकारी प्रदान करेगी। आम उत्पादन में सुधार से ग्रामीण आय बढ़ने, कृषि-आधारित उद्योग को बढ़ावा मिलने तथा ब्रांडेड स्थानीय उत्पादों के माध्यम से अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलने की उम्मीद है।

रोडमैप (नीतिगत व व्यावसायिक कदमों का चरणबद्ध योजना)

नीचे दी गई मार्गदर्शक 2025-2047 तक के लिए प्रमुख रणनीतियाँ एवं कार्यक्रम सुझाती है। इनमें बागों के पुनरुत्थान, किसान संगठनों का विकास, बुनियादी ढांचे में निवेश, अंतर्राष्ट्रीय

SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
Vol. 3, Issue 10, April 2026
Available Online : http://shodhprakashan.in/

विपणन विस्तार आदि शामिल हैं। प्रत्येक चरण में नीति-निर्देशक कदमों के साथ अपेक्षित परिणाम भी बताए गए हैं। रोडमैप को अंगीकृत रूप से लागू करने पर भागलपुर आम उद्योग में सतत विकास सुनिश्चित किया जा सकता है।

भागलपुर आम उद्योग का रोडमैप (2025-2047)

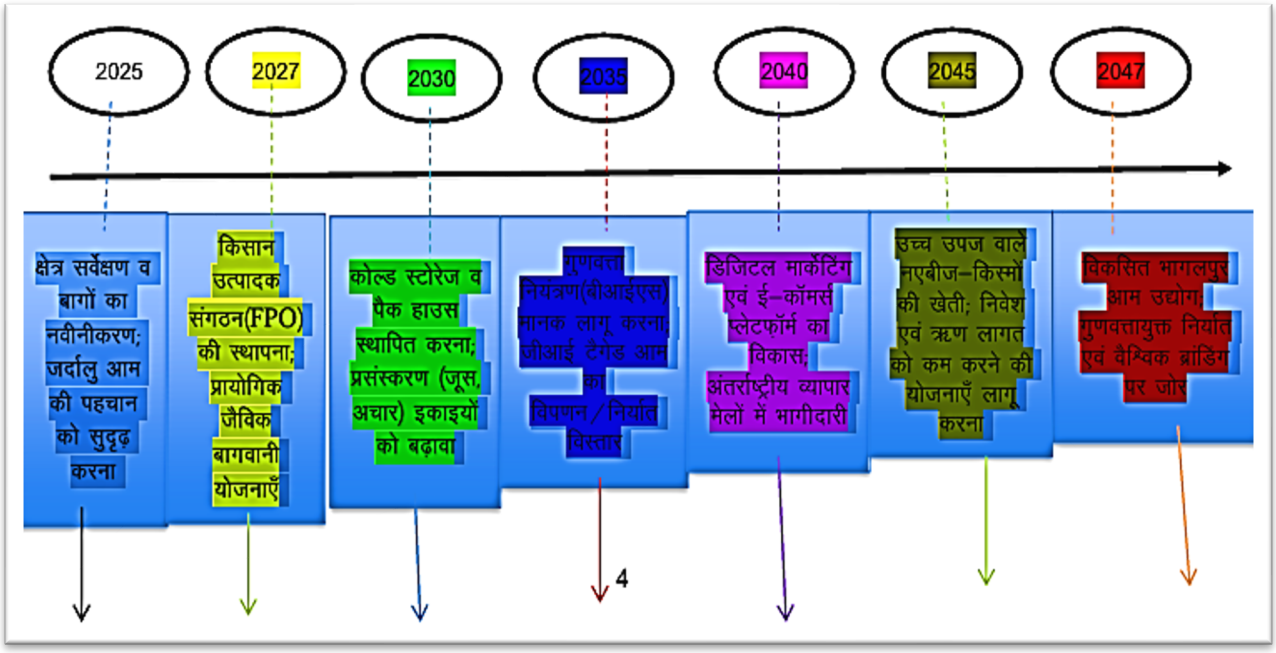

रोडमैप: भागलपुर आम उद्योग के सुधार व विकास के लिए चरणबद्ध नीतिगत तथा व्यावसायिक उपाय (स्रोतः विश्लेषण)।

प्रमुख चुनौतियाँ बनाम अवसर (Challenges vs Opportunities)

तालिका 2 में आम उद्योग से जुड़ी मुख्य चुनौतियां और उनसे जुड़े अवसर दिए गए हैं। यह तुलना नीति-निर्माताओं और हितधारकों को दोनों पक्षों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करेगी।

प्रमुख चुनौतियाँ	अवसर
पर्यावरणीय जोखिमः बदलते मौसम (अत्यधिक वर्षा/सूखे) से फसल जोखिम	**स्थानीय विविधताः** जर्दालु जैसे अनूठे किस्मों की वैश्विक माँग; पर्यटन एवं कृषि मेलों द्वारा प्रचार
भंडारण अभावः कोल्ड चेन, पाक हाउस की कमी से कटाई के बाद हानि	**प्रोसेसिंग व मूल्य संवर्धनः** जूस, पल्प, अचार आदि उत्पादों के लिए घरेलू बाजार"
बाजार तक पहुँचः छोटे किसान असंगठित; मध्यस्थों पर निर्भरता	**संगठन एवं सहकारीः** एफपीओ/सहकारी समितियाँ बनाने से किसानों का सौदा अधिकार बढ़ेगा

SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
Vol. 3, Issue 10, April 2026
Available Online : http://shodhprakashan.in/

वित्त एवं निवेशः सीमित पूंजी, ऋण सुविधाएं कम;	**सब्सिडी का असीमित वितरण नीति समर्थनः** MIDH, PMFME जैसी योजनाओं से 35-50% सब्सिडी (कोल्ड स्टोरेज आदि)
तकनीकी ज्ञानः आधुनिक खेती, सिंचाई व रोग प्रबंधन की कमी	**अनुसंधान एवं प्रशिक्षणः** राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के साथ साझेदारी; आधुनिक किस्में तथा जैविक खेती
बाजार अस्थिरताः कीमतों में उतार-चढ़ाव, उपभोक्ता परिवर्तनशीलता	**निर्यात संवर्धनः** जीआई टैग का उपयोग कर अंतर्राष्ट्रीय ब्रांडिंग; एसोशिएशन्स द्वारा निर्यात मेलों का आयोजन
तालिका 2: भागलपुर आम उद्योग के प्रमुख चुनौतियाँ और उनसे जुड़ी अवसर (स्रोतः विश्लेषण व संबद्ध अनुसंधान)।	

नीतिगत विकल्पों की लागत/लाभ/प्रभाव

(Policy Options-Cost/Benefit/Impact)

नीति-निर्देशक सुझावों के लिए संभावित विकल्पों के अनुमानित लागत, लाभ एवं प्रभाव इस प्रकार हैं। मूल रूप से यह तालिका यह समझने में मदद करेगी कि प्रत्येक पहल का परिणाम और संसाधन की आवश्यकता क्या हो सकती है। अनुमानित आँकड़े व मूल्यांकन विश्लेषण पर आधारित हैं।

	नीति विकल्प	अनुमानित लागत	प्रमुख लाभ	प्रभाव
1	किसान उत्पादक संगठन (FPO) सशक्तिकरण	मध्यम (आयोजनों व प्रशिक्षण)	खरीद-बिक्री में सामूहिक सौदा शक्ति बढ़ेगी; बाजार पहुँच आसान होगी	उच्च (किसान आय व सूद्धता में वृद्धि)
2	कोल्ड चेन व पैक हाउस निवेश	उच्च (इन्फ्रास्ट्रक्चर निर्माण)	कटाई-उपरांत हानि कम होगी; गुणवत्ता बेहतर होगी	उच्च (उत्पादकता व निर्यात बढ़ाव)
3	गुणात्मक मानकीकरण और ट्रैसेबिलिटी	मध्यम	उपभोक्ता विश्वास बढ़ेगा; अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों की पूर्ति	मध्यम (ब्रांडिंग को बढ़ावा)

SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
Vol. 3, Issue 10, April 2026
Available Online : http://shodhprakashan.in/

4	प्रसंस्करण इकाइयों का विकास (जूस, अचार)	उच्च	मूल्य वर्धन; स्थानीय उद्योगों को रोजगार	उच्च (स्थानीय प्रसंस्करण उद्योग में वृद्धि)
5	अनुसंधान एवं उच्च उपज वाली किस्में	मध्यम	बागों की उपज बढ़ेगी; रोग प्रतिरोधी पौधे विकसित होंगे	मध्यम (दीर्घकालीन उत्पादकता सुधार)
6	डिजिटल मार्केटिंग/ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म	मध्यम	किसानों को सीधे उपभोक्ताओं से जोड़कर कीमत बेहतर मिलेगी	मध्यम (नए बाजार विकसित होंगे)
7	उपभोक्ता जागरूकता अभियान	निम्न	स्थानीय आमों की मांग में वृद्धि; जीआई टैग के बारे में जागरूकता	कम (क्षेत्रीय बिक्री प्रभावित)
तालिका 3: प्रस्तावित नीतिगत विकल्पों का लागत, लाभ एवं संभावित प्रभाव (विश्लेषणाधीन)।				

नोटः लागत-लाभ आकलन अनुमानी है; तृतीय-पक्ष अध्ययन एवं सरकारी आर्थिक सर्वेक्षणों के आधार पर तैयार किया गया है।

निष्कर्ष

इस रिपोर्ट में भागलपुर के आम उद्योग से जुड़ी प्रमुख जानकारियाँ विश्लेषित की गईं। भागलपुर के जर्दालु आम की अनूठी गुणवत्ता और जीआई टैग जैसी उपलब्धि स्थानीय किसानों के लिए लाभदायक हैं। हालांकि, पारंपरिक उपज तकनीक, कमजोर भंडारण सुविधाएं तथा विकेंद्रित विपणन चैनल बाधक बने हुए हैं। इन चुनौतियों के समाधान हेतु किसान संगठनों का निर्माण, पैक हाउस और कोल्ड चेन का निवेश, गुणवत्ता मानकों का क्रियान्वयन और डिजिटल विपणन प्लेटफार्म को अपनाना जरूरी है।

सरकारी एवं क्षेत्रीय स्तर पर अपनाई गई योजनाओं (जैसे आमोत्सव, निर्यात कार्यक्रम) से अच्छी शुरुआत हो चुकी है। भविष्य में इन पहलों को तेज़ी से लागू करके, भागलपुर का आम उद्योग व्यावसायिक एवं निर्यात-उन्मुख बन सकता है। रोडमैप के चरणों को ध्यान में रखते हुए अगले 5-10 वर्षों में बागवानी पुनरुत्थान, प्रसंस्करण सुविधा विस्तार और अंतर्राष्ट्रीय बाजार की तैयारियाँ करके, 2047 तक इस उद्योग को देश के विकसित कृषि मॉडल के रूप में स्थापित किया जा सकता है। (Suggested Visual: आम उत्पादन व निर्यात में वृद्धि का रेखा आलेख)।

SHODH PRAKASHAN
An International Open Access, Peer Reviewed, Refereed Journal
ISSN : 2583-9861
Vol. 3, Issue 10, April 2026
Available Online : http://shodhprakashan.in/

संदर्भ (References)

1. (भारत सरकार व एपीईडा रिपोर्ट्स) APEDA वाणिज्य मंत्रालय। "First commercial consignment of GI certified Jardalu mangoes from Bihar exported to United Kingdom." 14 जून 2021.
2. कृषि विभाग एवं बिहार सरकार के आँकड़े
3. राजेश रेड्डी इत्यादि, "Post&Harvest Losses in Mango Supply Chains in India", Journal of Experimental Agriculture International, 2025.
4. प्रत्यूष मनोग्राफ, "An economic analysis of marketing channels for Zardalu mango in Bhagalpur District] Bihar", International Journal of Research in Agronomy, 2025.
5. "बिहार में दो दिवसीय आम महोत्सव संपन्न३" कृषक जगत समाचार (July 1, 2025).
6. "Bihar में आम खेती३" नव भारत टाइम्स (14 जून 2023).
7. "Erratic rainfall affects mango yields across India," Fresh Plaza (18 Dec 2025).
8. कृषि एवं उर्वरता मंत्रालय (मेरा गांव, मेरा देश पोर्टल) के आँकड़े.
9. सभी उद्धृत स्रोत सार्वजनिक क्षेत्र अथवा वैध रूप से उपलब्ध हैं।